



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4  
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 42]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, मार्च 4, 2004/फाल्गुन 14, 1925

No. 42]

NEW DELHI, THURSDAY, MARCH 4, 2004/PHALGUNA 14, 1925

ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया

अधिसूचना

मुम्बई, 23 फरवरी, 2004

ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया की  
उप-विधियों में संशोधन

सं. 0363/04/एल एंड एस/012.—सेबी द्वारा दिनांक 19 नवम्बर, 2003 के परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/सीआईआर-42/2003, 18 दिसम्बर, 2003 के परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/एआरबी/2419/2003, 13 जनवरी, 2004 के परिपत्र सं. सेबी/एमआईआरएसडी/सर-06/2004, 14 जनवरी, 2004 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/सर-7/2004 तथा 30 दिसम्बर, 2003 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/एटी/47/03 के जरिये यथा निर्देशित।

सदस्य ग्राहक करार में धारा 6 के बाद एक नई धारा 6ए अर्थात् भाग 'ए' के अध्याय-1 में उप-धारा 1.3.11 का अनुबंध-III :

6ए. धारा 6 में यथा वर्णित रूप में सौदों, लेन-देनों तथा संविदाओं से उत्पन्न कोई मतभेद या विवाद एक्सचेंज की उप-विधियों में नियत विवाचन व्यवस्था के अधीन होगा।

भाग 'ए' के अध्याय 4 में एक नई धारा 4.8 :

4.8. सदस्य/डीलरों तथा उनके ग्राहकों के बीच सौदों में पारदर्शिता बढ़ाने के उद्देश्य से सभी सदस्यों/डीलरों से यह अपेक्षित है कि वे अपने ग्राहकों को यह प्रकट करें कि क्या वे ग्राहक आधारित कारोबार करते हैं अथवा स्वामित्व कारोबार भी करते हैं। इसके संबंध में सदस्य/डीलर कृपया निम्नलिखित नोट करें :

1. सदस्य/डीलर अपने मौजूदा ग्राहकों को उपर्युक्त जानकारी प्रकट करेंगे।
2. इसके अतिरिक्त, सदस्य/डीलर 'अपने ग्राहक को जानने संबंधी करार' पर हस्ताक्षर के समय अपने नये ग्राहकों को अग्रिम रूप में इस सूचना को प्रकट करेंगे।
3. वर्तमान में स्वामित्व खाते पर कारोबार न करने वाला सदस्य/डीलर यदि बाद की तारीख में ऐसा करना चाहता है तो उसे कोई स्वामित्व कारोबार करने से पूर्व अपने ग्राहक को इसे प्रकट करना होगा।

भाग 'ए' के अध्याय 3 में धारा 3.4.6 के बाद नई उप-धाराएं 3.4.7, 3.4.8 तथा 3.4.9 :

- 3.4.7 एक्सचेंज का सदस्य एक्सचेंज की पूर्व अनुमति के सिवाय या तो स्वामित्व कारोबार के लिए या ग्राहकों की ओर से कारोबार के लिए उसी एक्सचेंज के सदस्यों के साथ सौदा नहीं कर सकता है। ऐसी अनुमति देते समय एक्सचेंज उसी एक्सचेंज के साथ लेन-देन करने के लिए सदस्यों द्वारा दिए गए कारणों पर विचार करेगा और सम्यक तत्परता बरतने के बाद ऐसे सदस्यों को उसी एक्सचेंज के सिर्फ एक सदस्य के साथ सौदा करने की अनुमति देगा।
- 3.4.8 एक्सचेंज का सदस्य स्वामित्व कारोबार के लिए अन्य एक्सचेंज के सिर्फ एक सदस्य के साथ सौदा कर सकता है। इसके लिए उसे अपने मूल स्टाफ एक्सचेंज को ऐसे सदस्य का नाम पहले सूचित करना होगा।
- 3.4.9 एक्सचेंज का सदस्य उप दलाल के रूप में आवश्यक पंजीकरण प्राप्त करने के बाद ग्राहकों की ओर से अन्य एक्सचेंज के सिर्फ एक सदस्य के साथ सौदा कर सकता है।

भाग 'ए' के अध्याय 2 में धारा 2.7 के बाद एक नई धारा 2.8 :

**2.8 थोक सौदों के लेन-देन ब्यौरों का प्रकटन :**

- 2.8.1 सदस्यों को ऐसे शेयर में सभी लेन-देनों के संबंध में एक्सचेंज को प्रकटन करना होगा जहां खरीदे/बेचे गये शेयरों की कुल मात्रा एक्सचेंज में सूचीबद्ध कम्पनी के इक्विटी शेयरों की संख्या के 0.5% से अधिक है।
- 2.8.2 सदस्य एक्सचेंज को शेयर का नाम, ग्राहक का नाम, खरीदे/बेचे गये शेयरों की मात्रा और क्रय-विक्रय मूल्य सूचित करेंगे।
- 2.8.3 सदस्यों द्वारा यह प्रकटन सौदे के निष्पादन के तुरंत बाद किया जायेगा।
- 2.8.4 एक्सचेंज आम जनता की जानकारी के लिए बाजार कारोबार समय के बाद उसी दिन उपर्युक्त सूचना प्रसारित करेगा।

भाग 'ए' के अध्याय 3 में धारा 3.10 के बाद एक नई धारा 3.11 :

**3.11. सदस्यों से मार्जिन**

**3.11.1 जोखिम पर मूल्य (VaR) आधारित मार्जिन**

- जोखिम पर मूल्य आधारित मार्जिन सौदे के समय अप्रकट आधार पर वसूल किया जायेगा।
- जोखिम पर मूल्य आधारित मार्जिन को सदस्य द्वारा जमा की गई अतिरिक्त पूंजी/संपार्श्विक प्रतिभूति के प्रति वसूल/समायोजित किया जायेगा।
- इस प्रकार वसूल किये गये मार्जिन को पे-इन के साथ जारी किया जाए।

कृते ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया  
के. कुमार, प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी  
[विज्ञापन III/IV/69 जैडसी/2003/असा.]

**OTC EXCHANGE OF INDIA****NOTIFICATION**

Mumbai, the 23rd February, 2004

**AMENDMENTS TO THE BUSINESS RULES OF  
OTC EXCHANGE OF INDIA**

No. 0363/04/L&S/012.—As directed by SEBI vide Circular No. SEBI/MRD/SE/CIR-42/2003 dated November 19, 2003, Circular No. SEBI/MRD/SE/ARB/2419/2003 dated December 18, 2003, SEBI Circular No. SEBI/MIRSD/CIR-06/2004 dated January 13, 2004, SEBI Circular No. SEBI/MRD/SE/CIR-7/2004 dated January 14, 2004 and SEBI Circular No. SEBI/MRD/SE/AT/47/03 dated December 30, 2003.

**A new Clause 6A after clause 6 in the Member-Constituent Agreement i.e.  
Annexure - III to sub-clause 1.3.11 in Chapter - 1 of Part 'A':**

- 6A. Any difference or dispute arising out of trades, transactions and contracts as stated in Clause 6, shall be subject to the arbitration mechanism as stipulated in the Bye-laws of the Exchange.**

**A new Clause 4.8 in Chapter 4 of Part 'A':**

- 4.8. With a view to increase the transparency in the dealings between the member/dealers and their clients, all member/dealers are required to disclose to his clients whether they do client based business or proprietary trading as well. In connection with the same, the member/ dealers may take note of the following:**
- 1. The member/dealers shall disclose the aforesaid information to his existing clients.**
  - 2. Further, the member/dealers shall disclose this information upfront to his new clients at the time of entering into the Know Your Client Agreement.**
  - 3. In case of a member/dealers who at present does not trade on proprietary account, chooses to do so at a later date, he shall be required to disclose this to his clients before carrying out any proprietary trading.**

**New sub-clauses 3.4.7, 3.4.8 & 3.4.9 after clause 3.4.6 in Chapter 3 of Part 'A':**

- 3.4.7 A member of the Exchange cannot deal with members of the same Exchange either for proprietary trading or for trading on behalf of clients, except with the prior permission of the Exchange. The Exchange while giving such permission, shall consider the reasons stated by the members for dealing with members of the same Exchange and after carrying out due diligence allow such members to deal with only one member of the same Exchange.**
- 3.4.8 A member of the Exchange can deal with only one member of another Exchange for proprietary trading after intimating the name of such member to his parent Stock Exchange.**
- 3.4.9 A member of the Exchange can deal with only one member of another Exchange on behalf of clients after obtaining necessary registration as a sub-broker.**

**A new clause 2.8 after clause 2.7 in Chapter 2 of Part 'A':****2.8 DISCLOSURE OF TRADE DETAILS OF BULK DEALS:**

- 2.8.1** The members shall make to the Exchange the disclosure with respect to all the transactions in a scrip where total quantity of shares bought/sold is more than 0.5% of the number of equity shares of the company listed on the Exchange.
- 2.8.2** The members shall disclose to the Exchange the name of the scrip, name of the client, quantity of shares bought/sold and the traded price.
- 2.8.3** The disclosure shall be made by the members immediately upon execution of the trade.
- 2.8.4** The Exchange shall disseminate the aforesaid information on the same day after market hours to the General Public.

**A new clause 3.11 after clause 3.10 in Chapter 3 of Part 'A'****3.11 MARGIN FROM THE MEMBERS****3.11.1 VaR based margin**

- i) The VaR based margin shall be collected on an upfront basis at the time of trade.
- ii) The VaR based margin shall be collected/adjusted against the additional capital/collateral deposited by the member.
- iii) The margin so collected may be released along with the pay-in.

For OTC Exchange of India

K. KUMAR, Managing Director & CEO

[ADVT III/IV/69 ZC/2003/Ext'y.]

**अधिसूचना**

मुम्बई, 9 फरवरी, 2004

**ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया की  
उप-विधियों में संशोधन**

सं. 0177/04/एल एंड एस/007.—31 अक्टूबर, 2003 को आयोजित अपनी बैठक में ओटीसीआई के बोर्ड द्वारा तथा 29 सितम्बर, 2003 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/सर-34/2003/29 और 30 सितम्बर, 2003 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/एसएमडी/एसई/सर-37/2003 द्वारा यथा अनुमोदित।

एक्सचेंज के कारोबारी नियम के भाग-क के अध्याय 4- "ग्राहकों के साथ संबंध" में दो नये खंड 4.6 तथा 4.7 शामिल करते हुए संशोधन :

**4.6. जोखिम प्रकटन दस्तावेज**

सदस्य अपने ग्राहकों को जोखिम प्रकटन दस्तावेज जारी करेगा और उन्हें दस्तावेजों के महत्व से अवगत करायेगा। सदस्यों को सूचित किया जाता है कि वे अपने ग्राहकों द्वारा विधिवत् हस्ताक्षरित दस्तावेज की एक प्रति प्राप्त करें और उसे सदस्य-ग्राहक करार के साथ सुरक्षित रखें। जोखिम प्रकटन दस्तावेज का प्रारूप अनुबंध IV में दिया गया है।

**4.7** सदस्य सभी ग्राहकों के लिए विशिष्ट ग्राहक कोडों का प्रयोग करेंगे जिसके लिए सदस्यों से अनुरोध है कि वे आंशिक विभाग द्वारा आबंटित पैन नम्बर प्राप्त करें और उसे अपने बैंक आफिस में सुरक्षित रखें। उप-दलालों से भी अपेक्षित है कि वे अपने ग्राहकों के लिए ऐसा करें। यह भी प्रावधान किया जाता है कि जहां किसी व्यक्तिगत ग्राहक के पास पैन नम्बर नहीं है, ऐसे ग्राहक को

इस आशय की एक घोषणा प्रस्तुत करनी होगी। ऐसी स्थिति में जब तक पैन नम्बर आबंटित नहीं किया जाता है, ऐसे ग्राहक को पासपोर्ट संख्या तथा उसे जारी करने का स्थान व तारीख प्रस्तुत करनी होगी, जहां ग्राहक के पास कोई पैन नम्बर या पासपोर्ट नहीं है, ऐसे ग्राहक को ड्राइविंग लाइसेंस, उसे जारी करने का स्थान व तारीख प्रस्तुत करनी होगी। यदि उपर्युक्त में से कोई भी दस्तावेज उपलब्ध नहीं है, ग्राहक को अपनी मतदाता पहचान पत्र संख्या देनी होगी। इसके अलावा, यह भी निर्णय किया गया है कि अक्सर प्रयुक्त बैंक खाता संख्या तथा ग्राहक के डिपॉजिटरी हिताधिकारी खाते के साथ राशन कार्ड संख्या प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाए।

उपर्युक्त आवश्यकता 1 लाख रुपये या इससे अधिक मूल्य के आर्डर मूल्य रखने वाले ग्राहकों के लिए लागू की गई है। सदस्यों से अपेक्षित है कि वे एक्सचेंज को अपने ग्राहकों के संबंध में उपर्युक्त विवरण प्रस्तुत करें और 30 दिनों के मासिक आधार पर अद्यतन करते रहें। किसी विशिष्ट महीने के लिए ऐसी जानकारी अनुवर्ती महीने के 7 कार्यदिवस के भीतर एक्सचेंज को मिल जानी चाहिए।

#### अनुबंध -IV

##### 'जोखिम प्रकटन दस्तावेज

यह दस्तावेज भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (इसमें इसके पश्चात् 'सेबी' कहा गया है) के समन्वयन से ओटीसीईआई ऑफ इंडिया (इसमें इसके पश्चात् 'ओटीसीईआई' कहा गया है) द्वारा जारी किया जाता है और इसमें ओटीसीईआई के इक्विटी घटक में लेन-देन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी निहित होती है। सभी ग्राहकों से अनुरोध है कि वे ओटीसीईआई में लेन-देन की जानेवाली किसी भी प्रतिभूति में कोई क्रय या विक्रय करने से पूर्व इसे पढ़ लें।

ओटीसीईआई/सेबी इस प्रकटन दस्तावेज की पूर्णता, पर्याप्तता या परिशुद्धता के बारे में न तो व्यक्त रूप से और न ही अन्तर्निहित रूप से गारंटी देता है और न ही कोई अभ्यावेदन करता है और न ही ओटीसीईआई/सेबी ने इस ट्रेडिंग घटक में भाग लेने के किसी गुण को पृष्ठांकित या स्वीकृत किया है। यह संक्षिप्त विवरण ट्रेडिंग के सभी जोखिमों तथा अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रकट नहीं करता है।

अन्तर्निहित जोखिमों के प्रकाश में, आपको लेन-देन तभी करना चाहिए जब आप संविदात्मक संबंध, जिसमें आप प्रवेश कर रहे हैं, के स्वरूप तथा जोखिम के प्रति अपनी अराक्षितता की सीमा को समझते हों।

आपको यह जानना तथा समझना चाहिए कि स्टॉक एक्सचेंज में लेन-देन किये जाने वाले इक्विटी शेयरों या अन्य लिखतों में निवेश, जिसे जोखिम पूंजी के रूप में जाना जाता है, सीमित संसाधन/सीमित निवेश तथा/या लेन-देन अनुभव तथा न्यून जोखिम सहनशीलता वाले व्यक्ति के लिए सामान्यतः एक उपयुक्त अवसर नहीं है। अतः आपको सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि क्या ऐसा लेन-देन आपकी वित्तीय स्थिति के आलोक में आपके लिए उपयुक्त है। यदि आप ओटीसीईआई में लेन-देन करते हैं तथा प्रतिकूल परिणाम या हानि उठाते हैं आप उसके लिए अकेले उत्तरदायी होंगे और ओटीसीईआई तथा/या सेबी उसके लिए किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं होगा और आप यह दलील नहीं दे सकेंगे कि अन्तर्निहित जोखिमों के बारे में पर्याप्त प्रकटन नहीं किया गया था, या कि आपको संबंधित सदस्य द्वारा अन्तर्निहित सारे जोखिमों को स्पष्ट नहीं किया गया था। ग्राहक परिणामों के लिए अकेले उत्तरदायी होगा और कोई भी संविदा इस कारण से रद्द नहीं की जाएगी। आपको अभिस्वीकृत तथा स्वीकार करना चाहिए कि ओटीसीईआई में लेन-देन की जा रही प्रतिभूति की खरीद तथा/या बिक्री के लिए आर्डर निष्पादित करते समय लाभ की कोई गारंटी नहीं हो सकती है और हानि से कोई अपवाद नहीं हो सकता है।

आपको यह बात स्पष्ट रूप से समझनी चाहिए कि ट्रेडिंग सदस्य के माध्यम से ओटीसीईआई में आपके सौदे ट्रेडिंग सदस्य द्वारा निर्दिष्ट कुछ औपचारिकताओं के आपके द्वारा पूरा करने के अधीन होंगे जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ आपके द्वारा अपने ग्राहक को जानिए फार्म, ग्राहक पंजीकरण फार्म भरना, करार का निष्पादन आदि शामिल हो सकता है और ओटीसीईआई के नियमों, उप-विधियों तथा विनियमों, सेबी द्वारा निर्धारित तथा समय-समय पर लागू दिशानिर्देशों और ओटीसीईआई द्वारा जारी तथा समय-समय पर लागू परिपत्रों के अधीन हैं।

ओटीसीईआई कोई सलाह नहीं देता है या देने का दावा नहीं करता है और ऐसे किसी व्यक्ति के प्रति दायी नहीं होगा जो इस दस्तावेज में निहित किसी सूचना के आधार पर ओटीसीईआई के किसी ट्रेडिंग सदस्य तथा/या उप दलाल तथा/या किसी अन्य पार्टी कोई कारोबारी संबंध रखता है। इस दस्तावेज में निहित किसी भी सूचना को कारोबारी सलाह/निवेश सलाह नहीं माना जाना चाहिए। ऐसे क्रय-विक्रय में निहित जोखिमों को पूरी तरह से समझे बिना उनकी समीक्षा किये बिना क्रय-विक्रय करने पर कोई विचार नहीं किया जाना चाहिए। यदि आपको कोई संदेह है, तो आपको उसके बारे में व्यावसायिक सलाह प्राप्त करनी चाहिए।

इस बात पर विचार करते समय कि क्रय-विक्रय स्वयं किया जाए या अपनी ओर से क्रय-विक्रय करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति को प्राधिकृत किया जाए, आपको निम्नलिखित बातों की जानकारी होनी चाहिए :

## 1. स्टॉक एक्सचेंजों में क्रय-विक्रय करने में निहित बूल जोखिम (इक्विटी तथा अन्य लिखत)

### 1.1. उच्चतर अस्थिरता का जोखिम :

अस्थिरता का संबंध प्रतिभूतियों के मूल्यों में गतिशील परिवर्तनों से है जब क्रय-विक्रय कार्यक्रमलाप एक्सचेंज में जारी रहता है। सामान्यतः प्रतिभूति में अस्थिरता जितनी ही अधिक होगी, उसके मूल्यों में उतार-चढ़ाव भी उतना ही अधिक होगा। अल्प लेन-देन वाली प्रतिभूतियों की अपेक्षा सक्रिय प्रतिभूतियों में सामान्यतः अधिक अस्थिरता होती है। अस्थिरता के फलस्वरूप आपका आर्डर सिर्फ आंशिक रूप से निष्पादित हो पाये या बिल्कुल निष्पादित न हो पाये या जिस मूल्य पर आपका आर्डर निष्पादित होता है वह अंतिम सौदा-भाव से काफी भिन्न हो या उसके बाद पर्याप्त परिवर्तन हो जाता है, जिससे कल्पित या वास्तविक हानि हो।

### 1.2. न्यूनतर चलनिधि का जोखिम :

चलनिधि का संबंध प्रतिस्पर्धी मूल्यों पर तथा न्यूनतम मूल्य अंतर के साथ प्रतिभूतियों को शीघ्रतापूर्वक बेचने तथा खरीदने की बाजार सहभागियों की क्षमता से है। सामान्यतः यह मान लिया जाता है कि बाजार में ऑर्डरों की संख्या जितनी ही अधिक होगी, चलनिधि उतनी ही अधिक होगी। चलनिधि महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिक चलनिधि होने से निवेशकों को तत्काल तथा न्यूनतम मूल्य अंतर के साथ प्रतिभूतियां खरीदने या बेचने में सुविधा होती है और परिणामस्वरूप निवेशकों को खरीदी या बेची गई प्रतिभूतियों के लिए प्रतिस्पर्धी मूल्य अदा करने या प्राप्त करने की अधिक संभावना रहती है। सक्रिय प्रतिभूतियों की तुलना में कुछ प्रतिभूतियों में चलनिधि का जोखिम न्यून हो सकता है। परिणामस्वरूप आपका आर्डर सिर्फ अंशतः निष्पादित हो पाये या अपेक्षाकृत अधिक मूल्य अंतर के साथ निष्पादित हो पाये या बिल्कुल निष्पादित न हो पाये।

1.2.1. दैनिक ट्रेडिंग रणनीति के एक हिस्से के रूप में प्रतिभूति की सुपुर्दगी देने तथा/या लेने के इशारे के बिना क्रय/विक्रय से भी हानि हो सकती है क्योंकि ऐसी स्थिति में शेयर को अपेक्षित मूल्य स्तरों की तुलना में कम/अधिक मूल्य पर बेचे/खरीदे जाने पड़ सकते हैं जिससे कि प्रतिभूति देने/प्राप्त करने का कोई दायित्व न रहे।

### 1.3. क्रय-विक्रय दर में व्यापक अंतर का जोखिम :

क्रय-विक्रय दरों में अंतर (स्प्रेड) का संबंध न्यूनतम क्रय मूल्य तथा अधिकतम बिक्री मूल्य में अंतर से है। यह कोई प्रतिभूति खरीदने और उसे तुरन्त बेचने या कोई प्रतिभूति बेचने और उसे तुरन्त खरीदने के मूल्यों के बीच अंतर है। न्यूनतम चलनिधि तथा अधिकतम अस्थिरता से कम नकदी या अनकदी प्रतिभूतियों के लिए सामान्य की अपेक्षा व्यापक क्रय-विक्रय दर अंतर हो सकता है। यह बदले में बेहतर मूल्य निर्माण को प्रभावित करेगा।

### 1.4. जोखिम कम करने वाले ऑर्डर :

अधिकोश स्टॉक एक्सचेंजों में निवेशकों के लिए "सीमा ऑर्डर", "हानि रोध आर्डर" आदि देने की सुविधा है। ऐसे ऑर्डर (अर्थात् हानि रोध आर्डर, या सीमा ऑर्डर) आदि देना, जिनका आशय कुछ मात्रा तक हानियों को सीमित करना है, कई बार प्रभावी नहीं हो सकता है क्योंकि बाजार दशाओं में तीव्र उतार-चढ़ाव से ऐसे आर्डरों को निष्पादित करना असंभव हो जाता है।

1.4.1. "बाजार" ऑर्डर मूल्य पर ध्यान दिये बिना पूर्णतः तथा अविलम्ब निष्पादित किया जाएगा और कि, जबकि ग्राहक को "बाजार" ऑर्डर का त्वरित निष्पादन मिल सकता है, निष्पादन बकाया ऑर्डरों के उपलब्ध मूल्यों पर हो सकता है जो मूल्य समयावधि प्राथमिकता पर ऑर्डर की मात्रा को पूरा करता है। यह ध्यान में रखा जाए कि ये मूल्य उस प्रतिभूति में अंतिम क्रय-विक्रय मूल्य या अधिकतम मूल्य से काफी भिन्न होंगे।

1.4.2. "सीमा ऑर्डर" ऑर्डर के लिए निर्दिष्ट "सीमा" मूल्य या बेहतर मूल्य पर निष्पादित किया जाएगा। तथापि, जबकि ग्राहक को मूल्य सुरक्षा प्राप्त होती है, ऐसी संभावना रहती है कि ऑर्डर बिल्कुल निष्पादित न हो पाये।

1.4.3. हानि रोध ऑर्डर सामान्यतः शेयर के वर्तमान मूल्य से "दूर" दिया जाता है और जब शेयर रोध मूल्य पर पहुँच जाता है या उससे गुजरता है तो ऐसा ऑर्डर सक्रिय हो उठता है। बिक्री रोध ऑर्डर सामान्यतः वर्तमान मूल्य से कम मूल्य पर दर्ज किये जाते हैं और क्रय रोध ऑर्डर सामान्यतः वर्तमान मूल्य से ऊपर दर्ज किये जाते हैं। जब शेयर पूर्व-निर्धारित मूल्य पर पहुँच जाता है या ऐसे मूल्य से गुजरता है, हानि रोध ऑर्डर बाजार/सीमा ऑर्डर में परिवर्तित हो जाता है और सीमा या बेहतर मूल्य पर निष्पादित हो जाता है। अतएव ऐसा कोई आश्वासन नहीं है कि सीमा ऑर्डर निष्पादनीय होगा क्योंकि शेयर पूर्व निर्धारित मूल्य में पहुँच सकता है, ऐसे मामले में, नियमित सीमा ऑर्डर की तरह ही ऐसे ऑर्डर के निष्पादित न होने का जोखिम उत्पन्न होता है।

### 1.5. समाचार घोषणाओं का जोखिम :

निर्गमकर्ता ऐसी घोषणाएं करते हैं जिनका उनकी प्रतिभूतियों के मूल्यों पर प्रभाव पड़ सकता है। ये घोषणाएं ट्रेडिंग के दौरान हो सकती हैं और जब न्यूनतम अर्थसुलभता और उच्चतम अस्थिरता का साथ मिल जाता है तो इनसे प्रतिभूति के मूल्य में अचानक अप्रत्याशित सकारात्मक या नकारात्मक उतार-चढ़ाव उत्पन्न हो सकता है।

**1.6. अफवाहों का जोखिम :**

अक्सर कंपनियों के बारे में अफवाहें सुनी-सुनाई बातों, वित्तीय समाचार पत्रों, वेबसाइट या समाचार एजेंसियों आदि के माध्यम से बाजार में फैलती हैं। निवेशकों को सतर्क रहना चाहिए और अफवाहों के आधार पर कोई कदम उठाने से बचना चाहिए।

**1.7. सिस्टम जोखिम :**

बाजार के खुलने पर और बाजार के बन्द होने से पूर्व अक्सर बड़ी मात्रा में लेन-देन होता है। ऐसी बड़ी मात्रा में लेन-देन दिन में किसी भी समय हो सकता है। इससे आदेश के निष्पादन या पुष्टि में विलम्ब हो सकता है।

1.7.1. अस्थिरता की अवधियों के दौरान, बाजार सहभागियों द्वारा अपने ऑर्डर की मात्रा या मूल्यों में लगातार संशोधन या नये ऑर्डर देने के कारण ऑर्डर के निष्पादन तथा उसकी पुष्टि में विलम्ब हो सकता है।

1.7.2. कुछ बाजार दशाओं में जब या तो क्रय पक्ष में या विक्रय पक्ष में कोई बकाया ऑर्डर नहीं है या यदि किसी असामान्य ट्रेडिंग कार्यकलाप की किसी कार्रवाई के कारण या शेयर के सर्किट फिल्टर को हिट करने या किसी अन्य कारण से प्रतिभूति में ट्रेडिंग बन्द कर दी जाती है तो उचित मूल्य पर बाजार में पोजिशन को बेचना कठिन या असंभव हो जाता है।

**1.8. सिस्टम/नेटवर्क संकुलन:**

ओटीसीआई में ट्रेडिंग सैटलाइट/लीज लाइन आधारित संचार पर आधारित इलेक्ट्रॉनिक रूप में होती है जो ऑर्डर देने और प्रेषित करने के लिए प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर प्रणालियों का समूह है। इस प्रकार संचार खराबी या सिस्टम समस्या या सिस्टम से धीमा या विलम्बित उत्तर या ट्रेडिंग ठप पड़ने या ऐसी किसी अन्य समस्या/ग्लिच की संभावना बनी रहती है जिसके द्वारा ट्रेडिंग सिस्टम या नेटवर्क से अभिगम स्थापित नहीं हो पाता है जो नियंत्रण के परे हो सकती है और जिससे क्रय या विक्रय ऑर्डरों को अंशतः या पूर्णतः निष्पादित करने में विलम्ब हो सकता है या निष्पादित नहीं हो पाएँ। आपको आगाह किया जाता है कि यद्यपि ये समस्याएँ स्वरूप में अस्थायी हो सकती हैं किन्तु जब आपके पास बकाया आरंभिक स्थिति या अनिष्पादित ऑर्डर हैं, निष्पादित किये गये सभी लेन-देनों का निपटान करने के आपके दायित्व के कारण इनमें जोखिम है।

**2. सामान्य :**

2.1. ग्राहकों के अधिकारों तथा उत्तरदायित्वों के लिए, कृपया इस दस्तावेज के साथ संलग्न अनुबंध-1 देखें।

2.2. 'ग्राहक' शब्द से तथा में क्लाइंट, कस्टमर या निवेशक अभिप्रेत तथा शामिल होगा जो ओटीसीआई द्वारा प्रदान की गई व्यवस्था के माध्यम से प्रतिभूतियों को अर्जित करने तथा/या बेचने के प्रयोजनार्थ ट्रेडिंग सदस्य के साथ संव्यवहार करता है।

2.3. 'ट्रेडिंग सदस्य' शब्द से तथा में ऐसे सदस्य, दलाल या शेयर दलाल अभिप्रेत तथा शामिल होगा जिसे ओटीसीआई द्वारा इस रूप में अभिस्वीकार किया गया है और जिसके पास सेबी से शेयर दलाल के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र है।

2.4. 'ट्रेडिंग सदस्य' या 'सदस्य' शब्द से सदस्य/डीलर अभिप्रेत होगा।

मैं एतद्वारा अभिस्वीकार करता हूँ कि यह जोखिम प्रकटन विवरण मुझे प्राप्त हुआ है और मैंने इसे समझ लिया है।

ग्राहक के हस्ताक्षर (यदि साझेदार, कार्पोरेट या अन्य हस्ताक्षरकर्ता है तो कंपनी की मुहर के साथ सत्यापित करें)

तारीख - माह वर्ष

**अनुबंध- II****निवेशकों के अधिकार तथा दायित्व**

1.1. आपको अपने ट्रेडिंग सदस्य के पास आपके द्वारा जमा की जाने वाली धनराशि या अन्य संपत्ति को विशेषकर शेयर बाजार में चूक या ब्रोकिंग फर्म के दिवाले या दिवालियेपन की स्थिति में प्रदान की गई सुरक्षा से स्वयं को अवगत रखना चाहिए।

1.1.1. कृपया सुनिश्चित करें कि ट्रेडिंग सदस्य के पास ऐसी धनराशि या संपत्ति जमा करने के बारे में आपके पास दस्तावेजी साक्ष्य हों जिसमें यह उल्लेख हो कि किस खाते के प्रति ऐसी धनराशि या संपत्ति जमा की गई है।

1.1.2. इसके अलावा, यह नोट किया जाए कि ऐसी धनराशि या संपत्ति को आपके द्वारा वसूल करने की सीमा समय-समय पर लागू ओटीसीआई की उप-विधियों तथा विनियमों तथा निवेशक संरक्षण निधि की योजना द्वारा नियंत्रित होगी।

1.1.3. जमाराशि, मार्जिन राशि आदि के संबंध में ट्रेडिंग सदस्य के साथ कोई विवाद और उसका कोई उपयुक्त प्रमाण प्रस्तुत करना ओटीसीआई के नियमों, उप विधियों/विनियमों के अनुसार विवाचन के अधीन होगा।

1.2. कोई लेन-देन प्रारंभ करने से पूर्व आपको अपने ट्रेडिंग सदस्य से दलाली, कमीशन, फीस तथा अन्य प्रभारों, जो लेन-देन के लिए आपको लगाया जाएगा, के बारे में स्पष्ट खुलासा प्राप्त करना चाहिए। ये प्रभार आपके नकदी अन्तर्वाह तथा बहिर्वाह को प्रभावित करेंगे।

1.3. आपको सम्यक सावधानी बरतनी चाहिए तथा ओटीसीआई तथा/या सेबी की निम्नलिखित आवश्यकताओं का पालन करना चाहिए :

1.3.1. कृपया सिर्फ सेबी के पास पंजीकृत ट्रेडिंग सदस्यों के साथ तथा के माध्यम से संव्यवहार करें जो स्टॉक एक्सचेंज के सदस्य हैं और एक्सचेंज में सौदा करने के लिए अधिकृत हैं। सेबी के पास पंजीकृत सभी ट्रेडिंग सदस्यों को एक रजिस्ट्रेशन नम्बर दिया जाता है जिसका सेबी से सत्यापन किया जाए।

1.3.2. ट्रेडिंग सदस्य से सत्यापन के प्रयोजनार्थ ऐसी जानकारी, ब्यौरे तथा दस्तावेजों की मांग करें जो आप उसकी विश्वसनीयता के बारे में स्वयं को संतुष्ट करने के लिए आवश्यक समझें।

1.3.3. ट्रेडिंग सदस्य द्वारा अपेक्षित ऐसे सभी ब्यौरे पूर्ण रूप में प्रस्तुत करें जो 'अपने ग्राहक को जानिए' संबंधी फार्म में आवश्यक हैं। इसमें पैन या पासपोर्ट या ड्राइविंग लाइसेंस या मतदाता पहचानपत्र या राशन कार्ड, बैंक खाता तथा डिपॉजिटरी खाता के ब्यौरे भी शामिल हैं जैसा निवेशक के पास उपलब्ध हों।

1.3.4. सेबी तथा/या ओटीसीआई के सम्बंधित अधिकारी द्वारा समय-समय पर निर्धारित प्रारूप में दलाल-ग्राहक करार निष्पादित करें क्योंकि यह ट्रेडिंग सदस्य के साथ आपके संव्यवहार संबंधी व्यवस्था के एक प्रमाण के रूप में उपयोगी हो सकता है।

1.3.5. प्रतिभूति खरीदने या बेचने हेतु कोई ऑर्डर लिखित रूप में या ऐसे रूप या रीति में दें जिसके लिए परस्पर सहमति हो। लिखित रूप में अनुदेश देना यह सुनिश्चित करता है कि ट्रेडिंग सदस्य के साथ किसी विवाद की स्थिति में आपके पास अपने इरादे के बारे में प्रमाण है।

1.3.6. सुनिश्चित करें कि ट्रेडिंग सदस्य द्वारा आपको एक संविदा नोट जारी किया जाए जिसमें प्रत्येक लेन-देन के सूक्ष्म रिकॉर्ड हों। सत्यापित करें कि संविदा नोट में ऑर्डर संख्या सौदा संख्या, सौदा समय, सौदा मूल्य, सौदा मात्रा, प्रतिभूति का नाम, आपको आबंटित क्लाइंट कोड के ब्यौरे हों और दलाली अलग से दिखाई गयी हो। संविदा नोट ट्रेडिंग सदस्य द्वारा निवेशकों को सौदे के अगले कार्यदिवस तक दे दिये/भेज दिये जाने चाहिए। संविदा नोट ट्रेडिंग सदस्य द्वारा या तो डिजिटल हस्ताक्षर का प्रयोग करते हुए इलेक्ट्रॉनिक रूप में या टंकित प्रति में जारी किया जा सकता है। यदि आपको अगले कार्यदिवस को या परस्पर सहमत समय पर संविदा नोट प्राप्त नहीं होता है, तो कृपया ओटीसीआई के निवेशक शिकायत कक्ष से संपर्क करें।

1.3.7. सुनिश्चित करें कि निपटान पर भुगतान/प्रतिभूतियों की सुपुर्दगी संबंधित ट्रेडिंग सदस्य को ओटीसीआई द्वारा घोषित पे-इन की तारीख से पहले एक कार्यदिवस के भीतर दी जाती है। भुगतान ट्रेडिंग सदस्य के फर्म/कंपनी के पक्ष में आदाता खाता देय चेक के माध्यम से ही किया जाना चाहिए और ट्रेडिंग सदस्य से इस आशय की रसीद या पावती प्राप्त की जानी चाहिए कि यह भुगतान किसके बाबत किया गया है। प्रतिभूतियों की सुपुर्दगी ट्रेडिंग सदस्य के हिताधिकारी खाते के बजाय ट्रेडिंग सदस्य के पूल खाते में की जानी चाहिए।

1.3.8. यदि धनराशि तथा/या प्रतिभूतियों का पे-आउट ओटीसीआई द्वारा घोषित पे-आउट की तारीख के बाद अगले कार्य दिवस को प्राप्त नहीं होता है, कृपया उसे जारी करने के लिए संबंधित ट्रेडिंग सदस्य के साथ अनुवर्तन करें। यदि पांच कार्यदिवस के भीतर ट्रेडिंग सदस्य द्वारा उपर्युक्त रूप में पे-आउट जारी नहीं किया जाता है, तो कृपया सुनिश्चित करें कि आप ओटीसीआई के निवेशक शिकायत कक्ष के पास अपनी शिकायत दर्ज करें।

1.3.9. प्रत्येक ट्रेडिंग सदस्य से यह अपेक्षित है कि वह ओटीसीआई द्वारा समय-समय पर निर्धारित अंतरालों पर अपने प्रत्येक ग्राहक को निधियों तथा प्रतिभूतियों दोनों के निपटान के लिए एक पूर्ण "खाता-विवरण" भेजे। विवरण में त्रुटि, यदि कोई है, की सूचना ट्रेडिंग सदस्य को तुरन्त, लेकिन उसके प्राप्त होने के 30 कैलेंडर दिन से पूर्व दी जानी चाहिए। यदि त्रुटि को सुधारा नहीं जाता है या कोई विवाद है तो कृपया सुनिश्चित करें कि आप ऐसे मामले ओटीसीआई के निवेशक शिकायत कक्ष को भेजें।



1.3.10. किसी ट्रेडिंग सदस्य/पंजीकृत उप-दलाल के विरुद्ध शिकायत के मामले में आपको ओटीसीआईआई द्वारा समय-समय पर निविष्ट कार्यालय के पास शिकायत भेजनी चाहिए।

1.4. ऐसे मामले में, जहाँ ट्रेडिंग सदस्य अपनी ट्रेडिंग सदस्यता समर्पित कर देता है, ओटीसीआईआई निवेशकों से दावे, यदि कोई है, आमंत्रित करते हुए एक सार्वजनिक सूचना जारी करता है। ओटीसीआईआई के "ट्रेडिंग सिस्टम पर निष्पादित सीदे" से संबंधित दावे के मामले में कृपया सुनिश्चित करें कि आप नियत अवधि के भीतर तथा सहस्रक दस्तावेजों के साथ अपना दावा प्रस्तुत करें।

1.5. ऐसे मामले में, जहाँ किसी ट्रेडिंग सदस्य को ट्रेडिंग सदस्यता से बर्खास्त कर दिया गया है या ब्रूककर्ता घोषित किया गया है, ओटीसीआईआई निवेशकों से दावे, यदि कुछ है, आमंत्रित करते हुए एक सार्वजनिक सूचना जारी करता है। ओटीसीआईआई के "ट्रेडिंग सिस्टम पर निष्पादित सीदे" से संबंधित दावे के मामले में कृपया सुनिश्चित करें कि आप नियत अवधि के भीतर तथा सहस्रक दस्तावेजों के साथ अपना दावा प्रस्तुत करें।

1.6. ब्रूककर्ता/बर्खास्त किये गये सदस्य के विरुद्ध संबंधित नियमों/उपविधियों तथा निवेशक संरक्षण निधि के अंतर्गत निर्धारित रूप में दाये प्राये गये दावों के संबंध में भुगतान पहले ब्रूककर्ताओं के विरुद्ध दावों के निपटान हेतु समिति में निहित सक्षि में से अनुपातिक आधार पर, यदि सक्षि अपर्याप्त है, किया जाएगा। दावे की शेष राशि, यदि कुछ है, अधिकतम \$0,000/- रुपये तक प्रति निवेशक दावा, प्रति ब्रूककर्ता/बर्खास्त सदस्य, देय होंगे, बशर्त कि ऐसे दावे निवेशक संरक्षण निधि की योजना के अंतर्गत देय हों।

#### टिप्पणी:

1. 'ग्राहक' शब्द से तथा में क्लाइंट, कस्टमर या निवेशक अभिप्रेत तथा शामिल होगा जो ओटीसीआईआई द्वारा प्रदान की गई व्यवस्था के माध्यम से प्रतिनिधियों को अर्पित करने तथा/या बेचने के प्रयोजनार्थ ट्रेडिंग सदस्य के साथ संव्यवहार करता है।

2. 'ट्रेडिंग सदस्य' शब्द से तथा में ऐसे सदस्य, दलाल या शेयर दलाल अभिप्रेत तथा शामिल होगा जिसे ओटीसीआईआई द्वारा इस रूप में अभिलेखित किया गया है और जिसके पास सेबी से शेयर दलाल के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र है।

कृते ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया

के. कुमार, प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

[ विज्ञापन III/IV/69 जेडसी/2003/असं. ]

#### NOTIFICATION

Mumbai, the 9th February, 2004

#### AMENDMENTS TO THE BUSINESS RULES OF OTC EXCHANGE OF INDIA

No. 0177/04/L&S/007.—As approved by the Board of OTCEI at its meeting held on October 31, 2003 and by SEBI Circular No. SEBI/MRD/SE/CIR-34/2003/29 dated September 29, 2003 and SEBI Circular No. SEBI/MRD/SE/CIR-37/2003 dated September 30, 2003.

Amendment by inserting two new clauses 4.6 and 4.7 in Chapter 4 - "Relation with the Constituents" of Part - A of the Business Rules of the Exchange:

#### 4.6. Risk Disclosure Document

The Member shall issue the Risk Disclosure Document to their constituents and make them aware of the significance of the document. The Members are advised to obtain a copy of the document duly signed by their constituents and preserve the same alongwith the Member - Constituent Agreement. The format of the Risk Disclosure Document is enclosed in Annexure IV.

4.7. The member shall use Unique Client Codes for all clients for which purpose the members are required to collect and maintain in their back office the PAN allotted by the Income Tax Department. The sub - brokers are also required to do the same for its clients. It is also provided that where an individual client does not have PAN number, such a client is required to give a declaration to that effect. In such an event, until the PAN number is allotted such client is required to furnish passport number and place & date of issue. Where the client does not have a PAN number or a passport, such client is required to furnish driving license number, place & date of issue. If none of the above are available, the client is required to give his voter ID number. In addition, it has been decided to allow the ration card number coupled with the frequently used bank account number and the depository beneficiary account of the client.

The above requirement is made applicable for clients having order value of Rs.1 lakh or more. The members are required to furnish the above particulars of their clients to the Exchange and the same is to be updated on a monthly basis. Such information for a specific month should reach the exchange within 7 working days of the following month.

#### Annexure IV

#### RISK DISCLOSURE DOCUMENT

This document is issued by the OTC Exchange of India (hereinafter referred to as "OTCEI") in coordination with the Securities and Exchange Board of India (hereinafter referred to as "SEBI") and contains important information on trading in the Equities Segment of OTCEI. All constituents are urged to read it before making a purchase or a sale in any security being traded on OTCEI.

OTCEI/SEBI does neither expressly nor impliedly guarantee nor make any representation concerning the completeness, the adequacy or accuracy of this disclosure document nor has OTCEI/SEBI endorsed or passed any merits of participating in this trading segment. This brief statement does not disclose all the risks and other significant aspects of trading.

In the light of the risks involved, you should undertake transactions only if you understand the nature of the contractual relationship into which you are entering and the extent of your exposure to risk.

You must know and appreciate that investment in Equity shares or other instruments traded on the Stock Exchange, known as risk capital, is generally not an appropriate avenue for someone of limited resources/limited investment and/or trading experience and low risk tolerance. You should therefore carefully consider whether such trading is suitable for you in the light of your financial condition. In case you trade on OTCEI and suffer adverse consequences or loss, you shall be solely responsible for the same and OTCEI, and/or SEBI shall not be responsible, in any manner whatsoever, for the same and it will not be open for you to take a plea that no adequate disclosure regarding the risks involved was made or that you were not explained the full risk involved by the concerned member. The constituent shall be solely responsible for the consequences and no contract can be rescinded on that account. You must acknowledge and accept that there can be no guarantee of profits or no exception from losses while executing orders for purchase and/or sale of a security being traded on OTCEI.

It must be clearly understood by you that your dealings on OTCEI through a trading member shall be subject to your fulfilling certain formalities set out by the trading member, which may inter alia include your filling the know your client form, client registration form, execution of an agreement, etc., and are subject to the Rules, Byelaws and Regulations of OTCEI, guidelines prescribed by SEBI and in force from time to time and Circulars as may be issued by OTCEI and in force from time to time.

OTCEI does not provide or purport to provide any advice and shall not be liable to any person who enters into any business relationship with any trading member and/or sub-broker of OTCEI and/or any third party based on any information contained in this document. Any information contained in this document must not be construed as business advice/investment advice. No consideration to trade should be made without thoroughly understanding and reviewing the risks involved in such trading. If you are unsure, you must seek professional advice on the same.

In considering whether to trade or authorize someone to trade for you, you should be aware of the following:

#### 1. BASIC RISKS INVOLVED IN TRADING ON THE STOCK EXCHANGE (EQUITY AND OTHER INSTRUMENTS)

##### 1.1 Risk of Higher Volatility:

Volatility refers to the dynamic changes in price that securities undergo when trading activity continues on the Stock Exchange. Generally, higher the volatility of a security, greater is its price swings. There may be normally greater volatility in thinly traded securities than in active securities. As a result of volatility, your order may only be partially executed or not executed at all, or the price at which your order got executed may be substantially different from the last traded price or change substantially thereafter, resulting in notional or real losses.

##### 1.2 Risk of Lower Liquidity:

Liquidity refers to the ability of market participants to buy and sell securities expeditiously at a competitive price and with minimal price difference. Generally, it is assumed that more the numbers of orders available in a market, greater is the liquidity. Liquidity is important because with greater liquidity, it is easier for investors to buy or sell securities swiftly and with minimal price difference, and as a result, investors are more likely to pay or receive a competitive price for securities purchased or sold. There may be a risk of lower liquidity in some securities as compared to active securities. As a result, your order may only be partially executed, or may be executed with relatively greater price difference or may not be executed at all.

**1.2.1** Buying/selling without intention of giving and/or taking delivery of a security, as part of a day trading strategy, may also result into losses, because in such a situation, stocks may have to be sold/purchased at a low/high prices, compared to the expected price levels, so as not to have any obligation to deliver/receive a security.

**1.3 Risk of Wider Spreads:**

Spread refers to the difference in best buy price and best sell price. It represents the differential between the price of buying a security and immediately selling it or vice versa. Lower liquidity and higher volatility may result in wider than normal spreads for less liquid or illiquid securities. This in turn will hamper better price formation.

**1.4 Risk-reducing orders:**

Most Exchanges have a facility for investors to place "limit orders," "stop loss orders" etc". The placing of such orders (e.g., "stop loss orders, or "limit" orders) which are intended to limit losses to certain amounts may not be effective many a time because rapid movement in market conditions may make it impossible to execute such orders.

**1.4.1** A "market" order will be executed fully and promptly without regard to price and that, while the customer may receive a prompt execution of a "market" order, the execution may be at available prices of outstanding orders, which satisfy the order quantity, on price time priority. It may be understood that these prices may be significantly different from the last traded price or the best price in that security.

**1.4.2** A "limit" order will be executed only at the "limit" price specified for the order or a better price. However, while the customer receives price protection, there is a possibility that the order may not be executed at all.

**1.4.3** A stop loss order is generally placed "away" from the current price of a stock, and such order gets activated if and when the stock reaches, or trades through, the stop price. Sell stop orders are entered ordinarily below the current price, and buy stop orders are entered ordinarily above the current price. When the stock reaches the pre-determined price, or trades through such price, the stop loss order converts to a market/limit order and is executed at the limit or better. There is no assurance therefore that the limit order will be executable since a stock might penetrate the pre-determined price, in which case, the risk of such order not getting executed arises, just as with a regular limit order.

**1.5 Risk of News Announcements:**

Issuers make news announcements that may impact the price of their securities. These announcements may occur during trading, and when combined with lower liquidity and higher volatility, may suddenly cause an unexpected positive or negative movement in the price of the security.

**1.6 Risk of Rumours:**

Rumours about companies at times float in the market through word of mouth, financial newspapers, websites or news agencies, etc. The investors should be wary of and should desist from acting on rumours.

**1.7 System Risk:**

High volume trading will frequently occur at the market opening and before market close. Such high volumes may also occur at any point in the day. These may cause delays in order execution or confirmation.

**1.7.1** During periods of volatility, on account of market participants continuously modifying their order quantity or prices or placing fresh orders, there may be delays in order execution and its confirmations.

**1.7.2** Under certain market conditions, it may be difficult or impossible to liquidate a position in the market at a reasonable price or at all, when there are no outstanding orders either on the buy side or the sell side, or if trading is halted in a security due to any action on account of unusual trading activity or stock hitting circuit filters or for any other reason.

**1.8 System/Network Congestion:**

Trading on OTCEI is in electronic mode, based on satellite/leased line based communications, combination of technologies and computer systems to place and route orders. Thus, there exists a possibility of communication failure or system problems or slow or delayed response from system or trading halt, or any such other problem/glitch whereby not being able to establish access to the trading system/network, which may be beyond the control of and may result in delay in processing or not processing buy or sell orders either in part or in full. You are cautioned to note that although these problems may be temporary in nature, but when you have outstanding open positions or unexecuted orders, these represent a risk because of your obligations to settle all executed transactions.

**2. GENERAL**

**2.1** For rights and obligations of the clients, please refer to Annexure-1 enclosed with this document.

**2.2** The term 'constituent' shall mean and include a client, a customer or an investor, who deals with a trading member for the purpose of acquiring and/or selling of securities through the mechanism provided by OTCEI.

**2.3** The term 'trading member' shall mean and include a member, a broker or a stock broker, who has been admitted as such by OTCEI and who holds a registration certificate as a stock broker from SEBI.

**2.4** The term 'trading member' or 'member' shall mean Member/ Dealer.

I hereby acknowledge that I have received and understood this risk disclosure statement.

Customer Signature (If Partner, Corporate, or other Signatory, then attest with company seal.)

DD MMM YYYY

#### ANNEXURE-1

##### INVESTORS' RIGHTS AND OBLIGATIONS:

**1.1** You should familiarise yourself with the protection accorded to the money or other property you may deposit with your trading member, particularly in the event of a default in the stock market or the broking firm's insolvency or bankruptcy.

**1.1.1** Please ensure that you have a documentary proof of your having made deposit of such money or property with the trading member, stating towards which account such money or property deposited.

**1.1.2** Further, it may be noted that the extent to which you may recover such money or property may be governed by the Bye-laws and Regulations of OTCEI and the scheme of the Investors' Protection Fund in force from time to time.

**1.1.3** Any dispute with the trading member with respect to deposits, margin money, etc., and producing an appropriate proof thereof, shall be subject to arbitration as per the Rules, Byelaws/ Regulations of OTCEI.

**1.2** Before you begin to trade, you should obtain a clear idea from your trading member of all brokerage, commissions, fees and other charges which will be levied on you for trading. These charges will affect your net cash inflow or outflow.

**1.3** You should exercise due diligence and comply with the following requirements of the OTCEI and/or SEBI:

**1.3.1** Please deal only with and through SEBI registered trading members who are members of the Stock Exchange and are enabled to trade on the Exchange. All SEBI registered trading members are given a registration no., which may be verified from SEBI.

**1.3.2** Demand any such information, details and documents from the trading member, for the purpose of verification, as you may find it necessary to satisfy yourself about his credentials.

**1.3.3** Furnish all such details in full as are required by the trading member as required in "Know your client" form, which may also include details of PAN or Passport or Driving License or Voters Id, or Ration Card, bank account and depository account, as is available with the investor.

**1.3.4** Execute a broker-client agreement in the form prescribed by SEBI and/or the Relevant Authority of OTCEI from time to time, because this may be useful as a proof of your dealing arrangements with the trading member.

**1.3.5** Give any order for buy or sell of a security in writing or in such form or manner, as may be mutually agreed. Giving instructions in writing ensures that you have proof of your intent, in case of disputes with the trading member.

**1.3.6** Ensure that a contract note is issued to you by the trading member which contains minute records of every transaction. Verify that the contract note contains details of order no., trade number, trade time, trade price, trade quantity, name of security, client code allotted to you and showing the brokerage separately. Contract notes are required to be given/sent by the trading member to the investors latest on the next working day of the trade. Contract note can be issued by the trading members either in electronic form using digital signature as required, or in hard copy. In case you do not receive a contract note on the next working day or at a mutually agreed time, please get in touch with the Investors Grievance Cell of OTCEI.

**1.3.7** Ensure that payment/delivery of securities against settlement is given to the concerned trading member within one working day prior to the date of pay-in announced by OTCEI. Payments should be made only by account payee cheque in favour of the firm/company of the trading member and a receipt or acknowledgement towards what such payment is made be obtained from the trading member. Delivery of securities is made to the pool account of the trading member rather than to the beneficiary account of the trading member.

1.3.8 In case pay-out of money and/or securities is not received on the next working day after date of pay-out announced by OTCEI, please follow-up with the concerned trading member for its release. In case pay-out is not released as above from the trading member within five working days, ensure that you lodge a complaint with the Investors' Grievance Cell of OTCEI.

1.3.9 Every Trading Member is required to send a complete 'Statement of Accounts', for both funds and securities settlement to each of its constituents, at such periodicity as may be prescribed by the OTCEI from time to time. You should report errors, if any, in the Statement immediately, but not later than 30 calendar days of receipt thereof, to the Trading Member. In case the error is not rectified or there is a dispute, ensure that you refer such matter to the Investors' Grievance Cell of OTCEI.

1.3.10 In case of a complaint against a trading member/registered sub-broker, you should address the complaint to the Office as may be specified by OTCEI from time to time.

1.4 In case where a trading member surrenders his trading membership, OTCEI gives a public notice inviting claims, if any, from investors. In case of a claim, relating to "transactions executed on the trading system" of OTCEI, ensure that you lodge a claim with OTCEI within the stipulated period and with the supporting documents.

1.5 In case where a trading member is expelled from trading membership or declared a defaulter, OTCEI gives a public notice inviting claims, if any, from investors. In case of a claim, relating to "transactions executed on the trading system" of OTCEI, ensure that you lodge a claim with OTCEI within the stipulated period and with the supporting documents.

1.6 Claims against a defaulter/expelled member found to be valid as prescribed in the relevant Rules/ Bye-laws and the scheme under the Investors' Protection Fund (IPF) may be payable first out of the amount vested in the Committee for Settlement of Claims against Defaulters, on pro-rata basis if the amount is inadequate. The balance amount of claims, if any, to a maximum amount of Rs.50,000 per investor claim, per defaulter/expelled member may be payable subject to such claims being found payable under the scheme of the IPF.

#### Notes:

1. The term 'constituent' shall mean and include a client, a customer or an investor, who deals with a trading member of OTCEI for the purpose of acquiring and / or selling of securities through the mechanism provided by OTCEI.
2. The term 'trading member' shall mean and include a member or a broker or a stock broker, who has been admitted as such by OTCEI and who holds a registration certificate as a stock broker from SEBI.

For OTC Exchange of India

K. KUMAR, Managing Director & CEO

[ADVT III/IV/69 ZC/2003/Exty.]

अनुबंध-III

#### अधिसूचना

मुम्बई, 9 फरवरी, 2004

#### ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया की उप-विधियों में संशोधन

सं. 0351/04-एनआईएस/002.—7 अगस्त, 2003 को आयोजित अपनी बैठक में ओटीसीआई के बोर्ड द्वारा तथा 18 जून, 2003 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/आईएसएमडी/एसई/सर-24/2003/18/06 और 11 जून, 2003 के परिपत्र सं. सेबी/एसएमडी/एसई/सर-22/2003/11/06 द्वारा यथा अनुमोदित।

उप-विधियों में अद्यतन III-क के तहत एक नया अध्याय III-ख सम्मिलित करते हुए संशोधन :

#### III-ख. मूल न्यूनतम पूंजी

##### 1. मूल न्यूनतम पूंजी (निरूपणी)

ओटीसीआईआई में सदस्य द्वारा की गई, निष्पादित, वचनबन्ध की गई, कार्यान्वित की गई या करार की गई किसी भी संविदा (कॉन्ट्रैक्ट) से उत्पन्न या से प्रासंगिक एक्सचेंज/समाशोधन संस्था या किसी अन्य पार्टी के प्रति सदस्य की

वचनबद्धता, प्रतिबद्धता, सक्रियता, दायित्व क सम्यक् निष्पादन तथा पूर्ति के लिए प्रतिभूति के रूप में ली जाती है। न्यूनतम मूल पूंजी 4 लाख रुपये है। सभी सदस्यों को एक्सचेंज में अपने सक्रियण से पूर्व मूल न्यूनतम पूंजी की आवश्यकता का पालन करना होता है।

सदस्य निम्नलिखित के जरिए मूल न्यूनतम पूंजी पूरा करने का विकल्प चुन सकते हैं :

- i) एक्सचेंज के पास जमा की जाने वाली नकदी - न्यूनतम 25%
- ii) सावधि जमा रसीद (एफडीआर) जमा करना - अनुमोदित बैंकों द्वारा जारी न्यूनतम 25%
- iii) प्रतिभूति तथा/या बैंक गारंटी - (अधिकतम 50%)

सेबी ने 2 जून 1999 के अपने परिपत्र सं. एसएमडीआरपी/पालिसी/सर-19-99 के जरिए निम्नलिखित रूप में मूल पूंजी की संरचना की सिफारिश की है :

- |      |                                      |   |               |
|------|--------------------------------------|---|---------------|
| i)   | नकदी                                 | - | न्यूनतम 12.5% |
| ii)  | नकदी/एफडीआर                          | - | न्यूनतम 12.5% |
| iii) | नकदी/एफडीआर/बैंक गारंटी/प्रतिभूतियां | - | अधिकतम 75%    |

एक्सचेंज का प्रस्ताव है कि मूल न्यूनतम पूंजी की पूर्वतर संरचना को जारी रखा जाए क्योंकि यह जोखिम प्रबंधन की दृष्टि से बेहतर है।

सेबी ने 18 जून 2000 के परिपत्र सं. सेबी/एसएमडी/एसई/सर-24/2003/18/06 के जरिए न्यूनतम बीएमसी से संबंधित खंड को निम्नलिखित रूप में संशोधित किया है :

इस परिपत्र की तारीख से पिछले तीन लगातार महीनों के लिए 1 करोड़ रुपये से कम औसत दैनिक टर्नओवर रखनेवाले एक्सचेंज न्यूनतम मूल पूंजी को 1 लाख रुपये के स्तर पर बनाये रखें। इसके अलावा, वे एक्सचेंज में न्यूनतम मूल पूंजी को 1 लाख रुपये के स्तर पर बनाये रखने के लिए पात्र होंगे जिनका इस परिपत्र की तारीख के बाद किसी भी तीन लगातार महीनों के लिए औसत दैनिक टर्नओवर 1 करोड़ रुपये से कम हो। बीएमसी की 1 लाख रुपये से अधिक राशि निम्नलिखित शर्तों के अधीन सदस्यों को वापस की जाए :

- क) सदस्य पिछले 12 महीनों से स्टॉक एक्सचेंज में सक्रिय नहीं है अर्थात् उसने पिछले 12 महीनों के दौरान उस स्टॉक एक्सचेंज में कोई लेन-देन नहीं किया है।
- ख) सदस्य के विरुद्ध कोई निवेशक शिकायत लम्बित नहीं है।
- ग) सदस्य के विरुद्ध कोई विवाचन मामला लम्बित नहीं है।
- घ) एक्सचेंज बीएमसी में से सदस्य के विरुद्ध निवेशकों को किसी शिकायत/दावे की राशि तथा लम्बित विवाचन मामलों, अपीलकृत विवाचन पंचाटों, प्रशासनिक खर्चों, सेबी टर्नओवर फीस आदि से उत्पन्न एक्सचेंज/सेबी को क्रिस्टलित तथा समन्वित देयताओं की राशि प्रतिधारित करेगा/काटेगा/नामे करेगा।
- ङ) एक्सचेंज सुनिश्चित करेगा कि सदस्य ने सेबी टर्नओवर फीस का भुगतान किया है और इस संबंध में सेबी से अनापत्ति प्रमाणपत्र (एनओसी) प्राप्त किया है।

तथापि यदि एक्सचेंज का औसत दैनिक टर्नओवर इस परिपत्र की तारीख के बाद किसी भी समय एक महीने की अवधि के लिए 1 करोड़ रुपये के निर्धारित स्तर से अधिक हो जाता है, एक्सचेंज सदस्यों की बीएमसी की आवश्यकता को बढ़ाकर 19 जनवरी 1998 के सेबी परिपत्र एसएमडी/एसईडी/आरसीजी/270/98 में नियत स्तर पर वापस लायेगा और सदस्यों से इस आशय का एक वचनपत्र प्राप्त करेगा।

#### 1.1 प्रतिभूतियां जमा करने हेतु योजना

ट्रेडिंग सदस्य/डीलर अभिरक्षक के पास अनुमोदित प्रतिभूतियां, जिनका मूल्यांकन मार्जिन पर किया जाएगा, जमाकर जमा-आवश्यकता के प्रतिभूति घटक को पूरा करने का विकल्प चुन सकते हैं। यह जमा ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया में ट्रेडिंग सदस्य/डीलर द्वारा की गई, निष्पादित, वचनबंध की गई, कार्यान्वित की गई या करार की गई किसी भी संविदा से उत्पन्न या से प्रासंगिक, ट्रेडिंग सदस्य/डीलर द्वारा ओटीसीआई या किसी अन्य पार्टी को देय किसी राशि सहित एक ट्रेडिंग सदस्य/डीलर के रूप में ट्रेडिंग सदस्य/डीलर की वचनबद्धताओं, प्रतिबद्धताओं, सक्रियताओं, दायित्वों तथा देयताओं के सम्यक् निष्पादन तथा पूर्ति के लिए प्रतिभूति के रूप में ली जाती है।

जैसाकि भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) द्वारा 11 जून 2003 के अपने परिपत्र सं.सेबी/एसएमडी/एसई/सर-22/2003/11/06 के जरिए निदेश दिया गया है, प्रतिभूतियों के लिए पात्रता मानदंड की संशोधित संरचना निम्नलिखित रूप में होगी :-

मूल न्यूनतम पूंजी के प्रतिभूति हिस्से के प्रयोजनार्थ पात्र शेयर सिर्फ वही होंगे जो 15% के मानक हेयरकट के अधीन 11 मार्च 2003 के सेबी परिपत्र सं.एसएमडी/पॉलिसी/सर-9/2003 में यथा नियत शेयर मूल्यों में उतार-चढ़ाव तथा नकदी सुलभता के मानदंडों के अनुसार गुप 1 के रूप में वर्गीकृत हैं। तथापि छोटे स्टॉक एक्सचेंज मूल न्यूनतम पूंजी के प्रयोजनार्थ ऐसे शेयर भी स्वीकार कर सकते हैं जो बीएसई या एनएसई में गुप 1 में हैं। इन शेयरों का मूल्यांकन सप्ताह में कम से कम एक बार किया जाएगा।

## 1.2 अतिरिक्त पूंजी

यदि कोई सदस्य अतिरिक्त पूंजी जमा करना चाहता है, वह नकदी, सावधि जमा रसीद या ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया के पक्ष में बैंक गारंटी के लिए जमा की जाए।

जैसाकि भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) द्वारा 11 जून 2003 के अपने परिपत्र सं.सेबी/एसएमडी/एसई/सर-22/2003/11/06 के जरिए निदेश दिया गया है, यह निर्णय लिया गया है कि अतिरिक्त पूंजी की संशोधित संरचना निम्नलिखित रूप में होगी :

1. अतिरिक्त पूंजी तथा मार्जिन का नकदी तथा गैर-नकदी घटक.
  - 1.1 अतिरिक्त पूंजी तथा मार्जिन के न्यूनतम नकदी घटक को 30% के मौजूदा स्तर से बढ़ाकर 50% किया जाएगा।
  - 1.2 अतिरिक्त पूंजी तथा मार्जिन के नकदी घटक को इस प्रकार से 50% तक बढ़ाया जायेगा कि एक्सचेंज के सदस्य ब्रोकरों द्वारा जून 2003 के अंत तक इसका पालन कर लिया जाए।
  - 1.3 मार्क-टु-मार्केट मार्जिन 2 जुलाई 1999 के सेबी परिपत्र सं.एसएमडीआरपी/पॉलिसी/सर-19/99 द्वारा पूर्वतर निर्धारित रूप में एक्सचेंजों द्वारा नकदी, बैंक गारंटी तथा एफडीआर के रूप में ही वसूल किया जाता रहेगा।
  - 1.4 नकदी घटक नकदी या नकदी समतुल्य रूप में हो सकता है। नकदी समतुल्य निम्नवत् होगा।
  - 1.5 नकदी समतुल्य
    - क) नकदी समतुल्य में एफडीआर, बैंक गारंटियां (नीचे निर्दिष्ट रूप में), सरकारी प्रतिभूतियां तथा नकदी सुलभ म्यूचुअल फंडों या सरकारी प्रतिभूति म्यूचुअल फंडों (चाहे जिस नाम से उन्हें बुलाया जाए, जो सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं) की योजनाओं के यूनिट शामिल होंगे।
    - ख) सरकारी प्रतिभूतियों के लिए हेयरकट 10% होगा।
    - ग) नकदी सुलभ म्यूचुअल फंडों या सरकारी प्रतिभूति म्यूचुअल फंडों (चाहे जिसे नाम से उन्हें बुलाया जाए, जो सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं) की योजनाओं के यूनिटों के लिए हेयरकट निवल आस्ति मूल्य (एनएवी) का कम से कम 10% होगा।
    - घ) बैंक गारंटियों को नकदी समतुल्य तभी माना जाएगा जब गारंटियां उन बैंकों द्वारा जारी की गई हैं जिनकी निवल संपत्ति 500 करोड़ रुपये से अधिक है।

1. एक्सचेंज या तो रुपया मूल्य में या व्यापार गारंटी निधि (टीएफजी)/निपटान गारंटी निधि (एसजीएफ) के प्रतिशत के रूप में निवेश जोखिम सीमाएं निर्धारित करेंगे जो किसी एक बैंक में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निवेश की जा सकती हैं और किसी भी मामले में किसी एक बैंक में टीजीएफ/एसजीएफ का निवेश एक्सचेंज के नकदी सुलभ आस्तियों के 15% से अधिक नहीं होगा।
2. ऊपर उल्लिखित निवेश जोखिम में बैंक द्वारा स्वयं के लिए तथा अन्यो के लिए प्रदान की गई गारंटियां और बैंक की ऋण तथा इक्विटी प्रतिभूतियां, जो सदस्यों द्वारा अतिरिक्त पूंजी या मार्जिन के लिए जमा की गई हैं, शामिल होंगी।

## 2. पात्र प्रतिभूतियों तथा उनका मूल्यांकन

- 1.1 जबकि धारा 1 अतिरिक्त पूंजी तथा मार्जिन के नकदी तथा गैर-नकदी घटक को निर्दिष्ट करती है और खंड 1.5 कुछ प्रकार की म्यूचुअल फंड योजनाओं के यूनिटों सहित उन प्रतिभूतियों को विशेष रूप से निर्दिष्ट करता है जिन्हें नकदी समतुल्य माना जा सकता है, यह धारा मूल न्यूनतम पूंजी, अतिरिक्त पूंजी तथा मार्जिन के गैर-नकदी घटक के प्रयोजनार्थ इक्विटी शेयरों, म्यूचुअल फंडों के यूनिटों सहित प्रतिभूतियों के प्रकार, जिन्हें पात्र प्रतिभूतियां माना जा सकता है और हेयरकट को निर्दिष्ट करती है।

**अतिरिक्त पूंजी**

- क) 11 मार्च 2003 के सेबी परिपत्र सं.एसएमडी/पालिसी/सर-9/2003 में यथा निर्धारित शेयर मूल्यों में उतार-चढ़ाव तथा नकदी सुलभता के मानदंडों के अनुसार स्टॉक एक्सचेंज में ग्रुप 1 में वर्गीकृत इक्विटी शेयर अतिरिक्त पूंजी तथा मार्जिन के गैर-नकदी घटक के लिए प्रतिभूति के रूप में मात्र होने जो इक्विटी शेयरों के संबंधित वीएआर के समतुल्य हेयरकट के अधीन होगा.
- ख) सभी म्यूचुअल फंडों के यूनिट भी अतिरिक्त पूंजी तथा मार्जिन के गैर-नकदी घटक के प्रयोजनार्थ मात्र प्रतिभूति होंगे जो यूनिट के एनएवी और म्यूचुअल फंड द्वारा प्रभारित एक्जिट भार के वीएआर के समतुल्य हेयरकट के अधीन होगा.
- ग) ऊपर 'क' तथा 'ख' का मूल्यांकन दैनिक आधार पर किया जाएगा.

कृते ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया

के. कुमार, प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

[ विज्ञापन III/IV/69 जैडसी/2003/असा. ]

**NOTIFICATION**

Mumbai, the 9th February, 2004

**AMENDMENTS TO THE BYE-LAWS OF  
OTC EXCHANGE OF INDIA**

No. 0351/04/L&S/008.—As approved by the Board of OTCEI at its meeting held on August 7, 2003 and by SEBI Circular Nos. SEBI/SMD/SE/CIR-24/2003/18/06 dated June 18, 2003 and Circular No. SEBI/SMD/SE/CIR-22/2003/11/06 dated June 11, 2003.

**Amendment by incorporating a new Chapter III-B after Chapter III-A in the Bye-laws:**

**III - B. BASE MINIMUM CAPITAL**

**1. Base Minimum Capital**

The Base Minimum Capital is being taken as security for due performance and fulfilment by the member of his engagements, commitments, operations, obligations towards the Exchange / Clearing Entity or any other party, arising out of or incidental to any contracts made, executed, undertaken, carried on or entered into by the member on the OTCEI. The minimum Base Capital is Rs.4 lakhs. All members have to comply with the Base Minimum Capital requirement before their activation on the Exchange.

The members may opt to meet the Base Minimum Capital by way of:

- i) Cash to be deposited with the Exchange- minimum 25 %
- ii) Deposit of Fixed Deposit Receipts (FDRs) - minimum 25 % issued by approved banks
- iii) Securities and/or Bank Guarantee - (maximum 50 %)

SEBI vide its circular no. SMDRP/POLICY/CIR-19/99 dated July 02, 1999 had recommended that the composition of the Base Capital be as follows:

- i) Cash - Minimum of 12.5%
- ii) Cash/FDR - Minimum of 12.5%
- iii) Cash/FDR/Bank Guarantee/Securities - Maximum of 75%.

The Exchange proposes to continue with the earlier composition of BMC as the same is better in terms of risk management.

SEBI vide circular no. SEBI/SMD/SE/Cir - 24/2003/18/06 dated June 18, 2003 has amended the clause relating to the minimum BMC as follows:



The Exchanges having average daily turnover of less than Rs.1 crore for the past three consecutive months from the date of this circular may maintain the BMC at Rs. 1 lakh. Besides, the exchanges which would have the average daily turnover less than Rs. 1 crore for any three consecutive months after the date of this circular would also be eligible to maintain the BMC at Rs. 1 lakh. The excess of the BMC over Rs. 1 lakh may be refunded to the members subject to the following conditions:

- a) The member has been inactive at the stock exchange for the past 12 months i.e., he has not carried out any transaction on that stock exchange during the past 12 months.
- b) There are no investor complaints pending against the member.
- c) There are no arbitration cases pending against the member.
- d) The exchange shall retain/deduct/debit from the BMC to be refunded, the amount of any complaints/claims of the investors against the member and for dues crystallized and contingent to the exchange/SEBI arising out of pending arbitration cases, appealed arbitration awards, administrative expenses, SEBI turnover fees, etc.
- e) The exchange shall ensure that the member has paid the SEBI turnover fees and has obtained a No- Objection Certificate (NOC) from SEBI in this regard.

However, if the average daily turnover of the exchange exceeds the prescribed level of Rs. 1 crore for a period of one month at any time after the date of this circular, the exchange shall enhance the requirement of the BMC of the members back to the level stipulated in SEBI Circular SMD/SED/RCG/270/96 dated January 19, 1996 and shall obtain undertaking to this effect from the members.

#### 1.1. Scheme for Deposit of Securities

Trading Member/Dealer may opt to meet the securities component of the deposit requirements by way of deposit of approved securities to be valued at a margin, with the custodian. The deposit is being taken as a security for due performance and fulfilment by the Trading Member/Dealer of its engagements, commitments, operations, obligations or liabilities as a Trading Member/Dealer including any sums due by the Trading Member/Dealer to OTCEI or any other party arising out of or incidental to any contracts made, executed, undertaken, carried on or entered into by the Trading Member/Dealer on the OTC Exchange of India.

As directed by Securities and Exchange Board of India (SEBI) vide its Circular No. SEBI/SMD/SE/CIR-22/2003/11/06 dated June 11, 2003, the revised composition of eligibility criteria for securities shall be as follows:-

The eligible shares for the purpose of the securities portion of the base minimum capital shall only be those which are classified as Group 1 in terms of the parameters of volatility and liquidity as stipulated in SEBI circular No. SMD/POLICY/CIR-9/2003 dated March 11, 2003, subject to a standard haircut of 15%. However, the smaller stock exchanges can also accept the shares that are in the Group 1 of the BSE or NSE for the purpose of base minimum capital. The valuation for these shares would be done atleast once a week.

#### 1.2. Additional Capital

In case the member wishes to submit additional capital the same may be submitted by means of Cash, Fixed Deposit Receipts or Bank Guarantees in favour of OTC Exchange of India.

As directed by Securities and Exchange Board of India (SEBI) vide its Circular No. SEBI/SMD/SE/CIR-22/2003/11/06 dated June 11, 2003, it has been decided that the revised composition of additional capital shall be as follows:-

1. Cash and Non- Cash component of additional capital and margins.
  - 1.1 The minimum cash component of the additional capital and margins shall be increased from the existing level of 30% to 50%.
  - 1.2 The cash component of additional capital and margins shall be increased to 50% in a manner so that this is complied with by the member brokers of the exchange by the end of June 2003.

- 1.3 The mark to market margin shall continue to be collected by the exchanges only in the form of cash, bank guarantee and FDRs as prescribed earlier by SEBI circular no SMDRP/Policy/Cir-19/99 dated July 02,1999.
- 1.4 The Cash component may be in the form of cash or cash equivalents. Cash equivalents would be as follows.
- 1.5 Cash Equivalent
  - a) Cash equivalent shall include FDRs, bank guarantees (as specified below), Government securities and units of the schemes of liquid mutual funds or government securities mutual funds (by whatever name called which invest in government securities).
  - b) The haircut for Government securities shall be 10%.
  - c) The hair cut for units of the schemes of Liquid mutual funds or government securities mutual funds (by whatever name called which invest in government securities) shall be atleast 10% of Net Asset Value (NAV).
  - d) The Bank Guarantees shall be considered as cash equivalent only if the guarantees have been provided by the banks whose networth is more than Rs 500 crores.

1. The exchanges shall lay down exposure limits either in rupee terms or as percentage of the Trade Guarantees Fund (TGF)/ Settlement Guarantee Fund (SGF) that can be exposed to a single bank directly or indirectly and in any case the exposure of the TGF/SGF to any single bank shall not be more than 15% of the total liquid assets forming part of TGF/SGF of the exchange.

2. The exposure as mentioned above would include guarantees provided by the bank for itself or for others as well as debt or equity securities of the bank which have been deposited by the members for additional capital or margins.

## 2. Eligible Securities and its Valuation.

- 2.1 While Section 1 specifies the cash and non- cash component of additional capital and margin and clause 1.5 in particular specifies the securities including the units of certain types of mutual fund schemes which could be considered as cash equivalent, this section specifies the type of securities, including equity shares, units of mutual funds which could be considered as eligible securities and hair cut for the purpose of non- cash component of base minimum capital, additional capital and margin.

### Additional Capital

- a) Equity shares classified in Group 1 at the stock exchange in accordance with the parameters of volatility and liquidity as prescribed in SEBI circular no. SMD/POLICY/CIR-9/2003 dated March 11, 2003 shall be eligible as security for the non-cash component of the additional capital and margin subject to haircut equivalent to the respective VaR of the equity shares.
- b) Units of all mutual funds shall also be eligible security for the purpose of non-cash component of additional capital and margin subject to a haircut equivalent to the VaR of the unit's NAV plus any exit load charged by the mutual fund.
- c) The valuation of a & b above shall be done on a daily basis.

For OTC Exchange of India

K. KUMAR, Managing Director & CEO

[ADVT III/IV/69 ZC/2003/Enty.]

## अधिसूचना

मुम्बई, 9 फरवरी, 2004

ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया की  
उप-विधियों में संशोधन

सं. 0352/04/एल एंड एस/009.—7 अगस्त, 2003 को आयोजित अपनी बैठक में ओटीसीआई के बोर्ड द्वारा तथा 5 जून, 2003 के सेबी परिपत्र सं. एसएमडी/एसई/21/2003/05/06 द्वारा यथा अनुमोदित।

## उप-विधि के अध्याय IX-ए में मौजूदा धारा 06 (एए)(1) तथा 06 (एए)(2) में परिवर्तन द्वारा संशोधन :

06 एए (1) निपटान गारंटी निधि का उपयोग किसी सदस्य को चूककर्ता घोषित करने से पूर्व निपटान में सदस्यों द्वारा निधि के वायित्वों की पूर्ति/आंशिक पूर्ति से उत्पन्न कमी को पूरा करने के लिए निम्नलिखित शर्तों के अधीन किया जा सकता है :

ऐसे मामलों में जहां कमी की राशि निर्धारित मूल न्यूनतम पूंजी (बीएमसी) से अधिक है, सदस्य की ट्रेडिंग सुविधा वापस ले ली जाती है और सदस्य को देय प्रतिभूति पे-आउट रोक लिया जाता है। जिन मामलों में कमी की राशि बीएमसी के 20% से अधिक है और तीन महीने की अवधि के भीतर छः अवसरों पर बीएमसी से कम है, सदस्य की ट्रेडिंग सुविधा वापस ले ली जाती है और सदस्य को देय प्रतिभूति पे-आउट रोक लिया जाता है। पूरी कमी की वसूली हो जाने पर सदस्य को नीचे तालिका में उल्लिखित रूप में घटाये गये सकल निवेश जोखिम (एक्सपोजर) के साथ क्रय-विक्रय करने की अनुमति दी जाती है :

संचयी निधि कमी	अनुमत निवेश-जोखिम सीमा (वर्तमान निवेश-जोखिम सीमा का %)
बीएमसी का 20% - बीएमसी का 50%	80%
बीएमसी का 50% - बीएमसी का 100%	60%

घटाये गये इस सकल निवेश जोखिम स्तर को दस रोलिंग निपटान की अवधि तक बनाये रखा जाता है। यदि अगले दस रोलिंग निपटानों के लिए संचयी निधि कमी बीएमसी के 20% से कम है तो निवेश जोखिम सीमाओं को बहाल कर दिया जाएगा। यदि कोई सदस्य अपने विल, रिंग खाते में 'निधि कमी संपार्श्विक' के रूप में अपनी संचयी निधि कमियों के समतुल्य नकदी प्रदान करता है तो निवेश जोखिम सीमा को बहाल किया जाए। ऐसी जमा राशि दस रोलिंग निपटानों की अवधि के लिए एक्सचेंज के पास रखी जाएगी और उसे तभी निर्मोचित किया जाएगा जब अगले दस रोलिंग निपटानों में सदस्य के लिए किसी और निधि कमी की रिपोर्ट नहीं मिलती है। 'निधि कमी संपार्श्विक' के रूप में जमा की गई इस राशि पर कोई निवेश-जोखिम लाभ या कोई ब्याज भुगतान नहीं है। सदस्य नकदी, सावधि जमा रसीद या बैंक गारंटी के जरिए 'निधि कमी संपार्श्विक' जमा कर सकते हैं।

06 एए (2) बकाया राशि पर न्यूनतम 0.07% प्रति दिन की दर से दैनिक ब्याज लगाया जाएगा।

कृते ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया

के. कुमार, प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

[ विज्ञापन III/IV/69 जैडसी/2003/असा. ]

## NOTIFICATION

Mumbai, the 9th February, 2004

AMENDMENTS TO THE BYE-LAWS OF  
OTC EXCHANGE OF INDIA

**No. 0352/04/L&S/009.**—As approved by the Board of OTCEI at its meeting held on August 7, 2003 and by SEBI Circular No. SMD/SE/21/2003/05/06 dated June 5, 2003.

**Amendments by altering the existing clauses 06(aa)(1) and 06(aa)(2) in Chapter IX-A of the Bye-laws:**

**06aa(1)** The Settlement Guarantee Funds may be utilized for meeting the shortages arising out of non-fulfilment/partial fulfilment of the funds obligations by the Members in a settlement before declaring the concerned member defaulter subject to the following:

In cases where amount of shortages are in excess of the base minimum capital (BMC) prescribed, the trading facility of the member is withdrawn and the securities pay-out due to the member is withheld. In cases where the amount of shortages exceed 20% of the BMC and is less than the BMC on six occasions within a period of three months, the trading facility of the member is withdrawn and the securities pay-out due to the member is withheld. On recovery of the complete shortages, the member is permitted to trade with a reduced gross exposure as mentioned in the table below:

Cumulative Funds Shortage	Exposure Limit Allowed (%age of current exposure limit)
20% of BMC - 50% of BMC	80%
50% of BMC - 100% of BMC	60%

This reduced gross exposure level is maintained for a period of ten rolling settlements. If the cumulative funds shortages for the next ten rolling settlements is less than 20% of BMC, the exposure limits shall be restored. The exposure limit may be restored if a member provides a cash deposit equivalent to his cumulative funds shortages as the 'funds shortage collateral' in his clearing account. Such deposit will be kept with the Exchange for a period of ten rolling settlements and will be released only if no further funds shortages are reported for the member in next ten rolling settlements. There is no exposure benefit nor any interest payment on this amount so deposited as 'funds shortage collateral'. Members may deposit the 'funds shortage collaterals' by way of cash, FDR or bank guarantee.

**06aa(2)** The outstanding amount would carry a penal interest of not less than 0.07% per day.

For OTC Exchange of India  
K. KUMAR, Managing Director & CEO  
[ADVT III/IV/69 ZC/2003/Ext.]

## अधिसूचना

मुम्बई, 9 फरवरी, 2004

ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया की  
उप-विधियों में संशोधन

सं. 0353/04/L&S/010.—7 अगस्त, 2003 तथा 18 सितम्बर, 2003 को आयोजित अपनी बैठक में ओटीसीआई के बोर्ड द्वारा तथा 25 जून, 2003 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/सर-26/2003/25/06 एवं 6 अगस्त, 2003 के परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/14855/2003/06/08 एवं 2 जून, 2003 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/एसएमडी/एसई/सर-19/2003/02/06 द्वारा यथा अनुमोदित।

कारोबार नियम के भाग - 'बी' में धारा 9.2 के बाद एक नई धारा 9.21 सम्मिलित करने हुए संशोधन :

## 9.21. डिबेंचरों तथा बांडों के संबंध में क्लोज आउट

5% का क्लोज आउट मार्कअप ऐसे डिबेंचरों तथा बांडों के मामले में लगाया जाएगा जिन्हें ट्रिपल 'ए' तथा इससे उच्च क्रेडिट रेटिंग प्रदान की गई है। तथापि ट्रिपल 'ए' क्रेडिट रेटिंग न रखने वाले अन्य डिबेंचरों तथा बांडों के लिए 20% का मौजूदा क्लोज आउट मार्कअप ईक्विटी के मामले में यथा लागू रूप में लागू रहेगा।

## उप-विधियों के अध्याय XIII की धारा 53(5) में संशोधन :

53(5) एक्सचेंज एक रजिस्टर रखेगी जिसमें नष्ट किये गये रिकार्डों का संक्षिप्त बीरा उनके नष्ट करने की तारीख तथा डेन के बारे में प्रमाणन के साथ दर्ज किया जाएगा।

## उप-विधियों के अध्याय XIII की धारा 01 के उप-धारा (घ) के बाद एक नई उप धारा (ड) सम्मिलित करने हुए संशोधन :

01(ड) विवाचन समिति के गठन का निर्णय समय-समय पर जारी किये गये सेबी के निर्देशों के अनुसार बोर्ड द्वारा किया जाएगा। एक्सचेंज का कोई भी दलाल सदस्य विवाचन समिति का सदस्य होने के लिए पात्र नहीं होगा।

कृते ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया

के. कुमार, प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

[चिह्नपत्र III/IV/69 वैडरी/2003/असा.]

## NOTIFICATION

Mumbai, the 9th February, 2004

AMENDMENTS TO THE BUSINESS RULES BYE-LAWS OF  
OTC EXCHANGE OF INDIA.

No. 0353/04/L&S/010.—As approved by the Board of OTCEI at its meetings held on August 7, 2003 and September 18, 2003 and by SEBI Circular No. SEBI/MRD/SE/CIR-26/2003/25/06 dated June 25, 2003 and SEBI/SMD/SE/14855/2003/06/08 dated August 6, 2003 and SEBI Circular No. SEBI/SMD/SE/CIR-19/2003/02/06 dated June 2, 2003.

Amendment by incorporating a new clause 9.21 after clause 9.20 in Part - 'B' of the Business Rules:

## 9.21 Close out in respect of debenture and bonds

The close out markup of 5% would be applied in case of debentures and bonds which are assigned a credit rating of triple A and above. However, for other debentures and the bonds without the triple A credit rating, the existing close out markup of 20% shall be applicable as is applicable in the case of equities.

Amendment to clause 53(5) of Chapter XIII of the Bye-laws:

53(5) The Exchange shall maintain a register wherein the serial particulars of the records destroyed shall be entered, alongwith the certification regarding the date and mode of destruction.

**Amendment by incorporating a new sub-clause(e) after sub-clause (d) of clause 01 of Chapter XIII of the Bye-laws:**

- 01(e)** The constitution of Arbitration Committee shall be decided by the Board in accordance with the directions of SEBI, issued from time to time. No broker member of the Exchange shall be eligible to be a member of the Arbitration Committee.

For OTC Exchange of India

K. KUMAR, Managing Director & CEO

[ADVT III/IV/69/ZC/2003/Exty.]

### अधिसूचना

सुम्बर, 9 फरवरी, 2004

### ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया की उप-विधियों में संशोधन

सं. 0354/04/एल एंड एस/011.—18 सितम्बर, 2003 को आयोजित अपनी बैठक में ओटीसीआई के बोर्ड द्वारा तथा 27 अगस्त, 2003 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/सर-32/2003/27/08 और 27 अगस्त, 2003 के सेबी परिपत्र सं. सेबी/एमआरडी/एसई/सर-33/2003/27/08 द्वारा यथा अनुमोदित।

कारोबार नियमों में संशोधन - भाग 'क' के अध्याय 3 में धारा 3.4.5 के बाद एक नई धारा 3.4.6 :

#### 3.4.6. "प्रो-अकाउंट" ट्रेडिंग टर्मिनल

1. ट्रेडिंग टर्मिनलों के माध्यम से 'प्रो-अकाउंट' पर ऑर्डर देने की सुविधा सदस्यों के सिर्फ एक स्थान पर प्रदान की जाएगी जैसाकि सदस्यों द्वारा निर्दिष्ट/अपेक्षित हो.
2. उपर्युक्त स्थान से निम्न स्थानों पर स्थित ट्रेडिंग टर्मिनलों में एक्सचेंज/सेबी द्वारा अपेक्षित/निर्दिष्ट रूप में क्लाइंट कोड ब्योरे दर्ज करते हुए सिर्फ क्लाइंट के लिए तथा की ओर से ऑर्डर देने की सुविधा होगी.
3. यदि कोई सदस्य एक से अधिक स्थानों से ट्रेडिंग टर्मिनलों के माध्यम से "प्रो-अकाउंट" का प्रयोग करने की सुविधा चाहता है तो ऐसे सदस्य को एकाधिक स्थानों पर "प्रो-अकाउंट" का प्रयोग करने के कारणों का उल्लेख करते हुए स्टॉक एक्सचेंज को एक वचन-पत्र प्रस्तुत करना होगा और स्टॉक एक्सचेंज सम्यक् तत्परता के बाद मामला-दर-मामला आधार पर एक से अधिक स्थानों से "प्रो-अकाउंट" के प्रयोग की अनुमति देने की सुविधा प्रदान करने पर विचार कर सकता है.

कारोबार नियम में संशोधन- भाग 'ख' के अध्याय 5 में धारा 5.13 के बाद एक नई धारा 5.13 क

#### 5.13 क - भुगतान तथा सुपुर्दगी का ढंग

1. इस बात को दोहराया जाता है कि दलालों तथा उप-दलालों को क्लाइंटों से कोई नकदी स्वीकार नहीं करनी चाहिए चाहे वह दायित्वों के प्रति हो या प्रतिभूतियों की खरीद के लिए मार्जिन के रूप में हो तथा/या क्लाइंटों को प्रतिभूतियों की बिक्री के प्रति कोई नकदी नहीं देनी चाहिए.
2. सभी भुगतान सिर्फ आदाता खाता रेखांकित चेक/मांग ड्राफ्ट द्वारा अथवा ईएफटी के माध्यम से बैंक खाते में सीधे जमा के जरिए अथवा भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अनुमोदित किसी अन्य विधि से क्लाइंटों से/को दलालों द्वारा प्राप्त/अदा किये जाएंगे, दलालों को सिर्फ क्लाइंटों द्वारा आहरित चेक स्वीकार करने चाहिए और क्लाइंटों के लेन-देनों के लिए सिर्फ क्लाइंटों के पक्ष में चेक जारी करने चाहिए. तथापि अपवादस्वरूप परिस्थितियों में दलाल या उप-दलाल उस सीमा तक नकदी में राशि प्राप्त कर सकते हैं जो समय-समय पर प्रचलित आयकर आवश्यकता के उल्लंघन में न हो.
3. इसी प्रकार प्रतिभूतियों के मामले में भी, "डीमैट रूप" में प्रतिभूतियों की सुपुर्दगी का लेन-देन भी स्टॉक एक्सचेंज तथा/या सेबी की अनुमोदित योजना के अंतर्गत मान्यताप्राप्त संस्था को प्रतिभूतियों की सुपुर्दगी के मामले को छोड़कर क्लाइंटों के "हिताधिकारी खातों" में/से होना चाहिए.

कृते ओटीसी एक्सचेंज ऑफ इंडिया

के. कुमार, प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

[विज्ञापन III/IV/69 जैडसी/2003/असा.]

## NOTIFICATION

Mumbai, the 9th February, 2004

AMENDMENTS TO THE BUSINESS RULES OF  
OTC EXCHANGE OF INDIA

No. 0354/04/L&S/011.—As approved by the Board of OTCEI at its meeting held on September 18, 2003 and by SEBI Circular Nos. SEBI/MRD/SE/CIR-32/2003/27/08 dated August 27, 2003 and SEBI Circular No. SEBI/MRD/SE/CIR-33/2003/27/08 dated August 27, 2003.

**Amendment to Business Rules – A new clause 3.4.6 after clause 3.4.5. in Chapter 3 of Part “A” :**

**3.4.6 “Pro- account” trading terminal**

1. The facility of placing orders on “pro-account” through trading terminals shall be extended only at one location of the members as specified/required by the members.
2. Trading terminals located at places other than the above location shall have a facility to place orders only for and on behalf of a client by entering client code details as required/specified by the Exchange/SEBI.
3. In case any member requires the facility of using “pro-account” through trading terminals from more than one location, such member shall be required to submit an undertaking to the stock exchange stating the reason for using the “pro-account” at multiple locations and the stock exchange may, on case to case basis after due diligence, consider extending the facility of allowing use of “pro-account” from more than one location.

**Amendment to Business Rules – A new clause 5.13A after clause 5.13 in Chapter 5 of Part “B”**

**5.13A Mode of payment and delivery**

1. It is reiterated that brokers and sub-brokers should not accept cash from the client whether against obligations or as margin for purchase of securities and/or give cash against sale of securities to the clients.
2. All payments shall be received/made by the brokers from/to the clients strictly by account payee crossed cheques/demand drafts or by way of direct credit into the bank account through EFT, or any other mode allowed by RBI. The brokers shall accept cheques drawn only by the clients and also issue cheques in favour of the clients only, for their transactions. However, in exceptional circumstances the broker or sub-broker may receive the amount in cash, to the extent not in violation of the Income Tax requirement as may be in force from time to time.
3. Similarly in the case of securities also giving/taking delivery of securities in “demat mode” should be directly to/from the “beneficiary accounts” of the clients except delivery of securities to a recognized entity under the approved scheme of the stock exchange and /or SEBI.

For OTC Exchange of India

K. KUMAR, Managing Director & CEO

[ADVTH/IV/69 ZC/2003/Ext.]